नफ़रत-हिंसा में घिरकर अब
बन बैठा अख़बार आदमी
बिक जाते हैं दो कौड़ी में
बिकने को तैयार आदमी

हक़ से वंचित दिखता है
जिसका था हक़दार आदमी

5

मर-मरकर यों जीना क्या
रोज ज़हर यूँ पीना क्या

घायल हर दिन होना है,
चाक जिगर फिर सीना क्या

रोटी में ही उलझे हम
मक्का और मदीना क्या

सबके हिस्से दुखड़ा है
रानी, मोनू, रीना क्या

तुझसे बढ़कर जीवन में
कोई और नगीना क्या

कविता

पुष्पेश कुमार पुष्प

विनीता भवन, निकट- बैंक ऑफ इंडिया,
काजीचक, सवेरा सिनेमा चौक, बाढ़, बिहार
Email- ushpeshkumar530@gmail.com

जीवन की वीरानगी में

जीवन की वीरानगी में भटकता इंसान,
अपनी तृष्णा की खोज में,
जैसे भटकता हिरन कस्तूरी की खोज में।
जो अज्ञान के अंधकार में डूबे,
भोग-विलास के सागर में गोते लगाते,
वे सिखाते हैं ज्ञान और वैराग्य की बातें।
मन का अंधेरा कैसे मिटे ?
यहां हर ओर फैला धर्म-कर्म के,
आवारण में ढोंगियों-पाखंडियों का संसार।
आओ ज्ञान का दीप जलाये,
मन के अंधियारे कोने में,
जहां ज्ञान, कर्म और वैराग्य का हो वास ,
जिसमें हर जीव के प्रति हो दया और करुणा का भाव।
अपनी आशा-तृष्णा का मोह मिटाकर,
दया-धर्म के पथ पर चलकर,
छू लो महानता की बुलंदियों को।